हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

* डॉ. सुशीला सारस्वत

सारांश –

राष्ट्रीयता का स्वप्न शब्दों के बंधन में बांधना कुछ कठिन तथा असंभावित है। राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव की अन्तश्चेतना से है। जो अनिर्वचनीय होने के कारण केवल अनुभूति का विषय है। यह मनुष्य की स्वभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र से विशेष प्रकार का लगाव रखता है और उसे सदा उन्नत तथा समृद्धशाली देखने को उत्सुक रहता है। इसी भावना के आवेग से उन्मत्त व्यक्ति अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में तथा सहर्ष अपना जीवन अर्पण कर देने में अपना गौरव समझता है। जिस राष्ट्र में राष्ट्रीयता की यह चेतना जितनी अधिक बलवनी होगी उतना ही वह शक्तिशाली तथा समृद्ध माना जाएगा।

प्रस्तावना –

इस विषय में डॉ० अम्बेडकर के विचार प्रस्तुत करना उपयुक्त है–''राष्ट्रीयता श्रेणीगत चेतना की एक अनुभूति है जो एक ओर तो उन व्यक्तियों को जिनमें यह इतनी प्रगाढ़ होती है कि आर्थिक संघर्ष या समाजगत उच्चता–निम्नता के कारण उत्पन्न होने वाले भेदभावों को दबाकर एक सूत्र में बांधे रखती है और दूसरी ओर उनको ऐसे लोगों से पृथक करती है जो उस श्रेणी के नहीं है।''[1]

वैसे भी राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने व परिभाषित करने में लगभग सभी मूर्धन्य विद्वानों ने कमी नहीं रखी। जिनमें से कुछ की बातें कहना चाहूँगी।

राष्ट्रीयता को श्री गिल ग्राइस्ट ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है – ''राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है जो एक व्यक्ति ही जाति, धर्म, भाषा, इतिहास, आचार–विचार एवं एक ही राजनीति आदर्श से संगठित हो।''[2]

वहीं गोबिन्द राम शर्मा के अनुसार – ''जातियां राष्ट्र के व्यक्तियों के एक साथ मिलकर रहने और सामूहिक रूप से अपने देश को उन्नत बनाने की इच्छा ही राष्ट्रीय भावना कहलाती है।[3]

वैदिक काल से ही राष्ट्र शब्द का उपयागे होता रहा है। राष्ट्र की परिभाषाएँ भी समय–समय पर परिवर्तित होती रही हैं। किन्तु राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना परतंत्रता के समय अधिक विकसित हुई जो साहित्य के माध्यम से हमारे समक्ष आई। परिणामस्वरूप साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ। चूंकि राष्ट्र का समाज से सीधा संबंध होता है। अतः किसी भी समाज की विशिष्ट जीवन पद्धति होती है जो कि राष्ट्र के रूप में दूसरे समाज को प्रभावित करती है। रूढ़ियों विकृत परम्पराओं से ग्रसित समाज राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जाता है। कवि मोह निद्रा में डूबे राष्ट्र को जागृति के गान गाकर संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्रीयता जैसी उक्त प्रवृतियों का

पोषण और विकास साहित्य द्वारा ही संभव है। अतः जहाँ तक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रश्न है तो हिन्दी साहित्य के उद्‌भव काल ने केंद्रिय सत्ता के भाव में राष्ट्रीयता की जड़े हिला दीं। अतः इस युग के सम्पूर्ण कात्य में राष्ट्रीय भावना का नितांत अभाव है किन्तु वही भक्तिकाल के भक्त कवियों के अर्न्तमन में बहती राष्ट्रीय चेतना धारा में सोये हुए निराश्रित समाज को नई दिशा दी। जहां एक ओर कबीर ने निराकार ब्रह्म की उपासना का उच्च आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्रीय गरिमा में नवीन जीवन का संचार किया। वहीं राष्ट्रीय भक्त तुलसी ने भी राम के समन्वयवादी लोकरक्षक स्वरूप को स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को भाक्ति प्रदान की।

''अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा, गावहिं श्रुति पुरान बुध वेदा।
अगुन अरूप अलख जग जोई। भक्ति प्रेम बस सगुन सो होई।''[4]

इतना ही नहीं सूर ने भी कर्मयोगी कृष्ण की विविध लीलाओं के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना का संचार किया और समाज को सत्कर्म के लिए जागृत किया। यद्यपि हिन्दी साहित्य का रीतिकाल श्रृंगारिकता का काल रहा है किन्तु उसमें भी राष्ट्रीय चेतना का स्वर अवश्य परिलक्षित होता है भूषण, वृन्द, मतिराम आदि कवियों के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की भावना यहां–वहां बिखरी हुई है। रीतिकवि भूषण के राष्ट्रवादी विचार इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उनके राष्ट्रवादी भावों ने लोक–चेतना को झकझोर दिया। यथा–

''इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सु अम्ब पर,
रावन सदेश पर रघुकुल राज है।
पौने वारिवाह पर शम्भू रतिनवाह पर,
ज्यों सहस्रवाहु पर राम द्विजराज है।''[5]

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल तो पूर्णतया राष्ट्रीय चेतना की भावना से ओतप्रोत है। एक साहित्यकार अपने युगीन परिवेश से अछूता नहीं रह सकता। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में देश में जो राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की लहर दौड़ रही थी यही राष्ट्रीय चेतना का स्तर इस काल में सम्पूर्ण साहित्य में परिलक्षित होता है। स्वतंत्रता संग्राम की धूम, देश में मची हलचल ने कवियों को राष्ट्रवादी काव्य की गंगा बहाने के लिये प्रेरित किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक राष्ट्रीय भावधारा लिये हुये कविताओं के गर्भ में राष्ट्रीय–चेतना का विकास होता रहा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी लेखनी के जादू से भारत दुर्दशा का चित्रांकन कर समाज को जाग्रति का संदेश दिया। इसी प्रकार द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त के द्वारा पहला राष्ट्रवादी स्वर उठा, गुप्तजी की भारत–भारती पढ़कर भारत के सैंकड़ों नौजवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ और वे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। उन्होनें अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाही का मुकाबला किया और जेल की यातनायें सही।

''हम कौन थे क्या हो गये,
और क्या होगे अभी
आओ विचारें बैठकर
ये समस्यायें सभी।''[6]

छायावादी कवियों की कविताओं में भी भारत के राष्ट्रीय जागरण एवं स्वतंत्रता प्रेम का शंखनाद सुनाई

देता है। छायावादी युग में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम अपने यौवन पर था। रोलेट एक्ट के दमन चक्र के बाद जलियांवाला बाग नृशंस हत्याकाण्ड इसी युग में घटित हुआ। महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया। लाला लाजपतराय ने साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए आंदोलन गठित किया। भगतसिंह को फांसी हुई। देश की ऐसी स्थिति से भला कवि कैसे अछूता रह सकता है। अतः सभी छायावादी कवि अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने लगे। निराला की 'वर दे वीणा वादिनी', भारती जय विजय करे, जागो फिर एक बार, प्रसाद की', 'अरूण यह मधुमय देश हमारा', 'चन्द्रगुप्त नाटक में आया', हिमद्रि तुंग–श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' आदि कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना प्रशस्त अभिव्यक्ति दी है।

हिन्दी की राष्ट्र काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देश–प्रेम व स्वतंत्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति दी है। इस समय राष्ट्रीयता को मुख्य प्रवृत्ति के रूप में अपनाने वाले अनेक कवि हुए जिनमें राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली आदि प्रमुख है। इसके अतिरिक्त सोहनलाल द्विवेदी, हरिकृष्ण प्रेमी, जगन्ननाथ प्रसाद मिलिन्द, श्याम नारायण पाण्डे, उदयशंकर भट्ट, केदारनाथ मिश्र, डॉ. सुधीन्द्र आदि अनेक कवियों ने भी राष्ट्रीयता से काव्य को सम्पन्न किया। एक भारतीय आत्मा कहलाने वाले माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में देश पर बलिदान होने की प्रेरणा सर्वाधिक है। ''पुष्प की अभिलाषा'' राष्ट्रीय भाव की अमर रचना है। जिससे युगों तक देशभक्त प्रेरणा लेते रहेंगे –

''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिन्ध प्यारी को ललचाऊँ।''[7]

सुभद्रा कुमारी चौहान भी राष्ट्रीय आन्दोलनों की नेता रहीं। वे अपनी प्रसिद्ध कविता झांसी की रानी में देशभक्तों का सच्चा गुणानुवाद करती है –

''बुंदेले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झांसी की रानी थी।''[8]

उदयशंकर भट्ट के ''तक्षशिला'', जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द के ''जीवन संगीत'', केदारमिश्र प्रभात की ''ज्वाला'' आदि रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखरित है।

इन कवियों के राष्ट्रीय वन्दना गीत न केवल हिन्दी की श्रेष्ठ गीत सष्टि हैं अपितु राष्ट्रीय चेतना की उदात्त भावना से ओतप्रोत उच्च कोटि के राष्ट्रीय गान हैं। ये गीत देश के प्रति अनुराग की भावना जगाने के साथ–साथ जननी जन्मभूमि के पावन चरणों पर श्रद्धानत हो आत्म बलिदान कर देने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय कविताओं में जहां एक ओर पराधीनता के प्रति क्षोभ का भाव अभिव्यक्त किया गया है वहीं दूसरी ओर देश के गौरवपूर्ण अतीत का गुणगान करते हुए देश के प्रति प्रेम का भाव प्रकट हुआ है। शोषण–अन्याय, पूँजीवादी और अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह एवं क्रांति के स्वर प्रस्फुटित हुए हैं। राष्ट्रीय उद्बोधक कवियों ने देश की समस्याओं में अपेक्षित सुधार लाने की भी प्रेरणा प्रदान की।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में जहां लाखों योद्धाओं ने अपने प्राणों की आहूति दी वहीं हिन्दी साहित्य के कवि भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहे और अपनी लेखनी का जादू दिखाते हुए इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया कि– जहाँ पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।

*व्याख्याता
हिन्दी विभाग
बी.बी.डी. राजकीय महाविद्यालय,
चिमनपुरा, (शाहपुरा)

संदर्भ ग्रंथ –

1. 'हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना', विद्यानाथ गुप्त, पृ. 6
2. 'हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना', विद्यानाथ गुप्त, पृ. 7
3. 'मधुमती' –सितम्बर 2006, पृ. 10
4. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा, पृ. 209
5. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा, पृ. 355
6. भारत–भारती, वर्तमान खण्ड, मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 10
7. पुष्प की अभिलाषा, माखनलाल चतुर्वेदी
8. झांसी की रानी, सुभद्रा कुमारी चौहान